3.3.1 Research Publication. 2018-19

Peer Reviewed
ISSN (P) : 2321-290X (E) 2349-980X

13

RNI No. : UPBIL/2013/55327

Srinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patr

Peer Reviewed / Refereed Journal

द्विभाषीय - मासिक

The Research Series

Shrinkhala

शृंखला

A Multi-Disciplinary International Journal

Indexed with Google

Impact Factor
(2018)
(2015)
(2018)

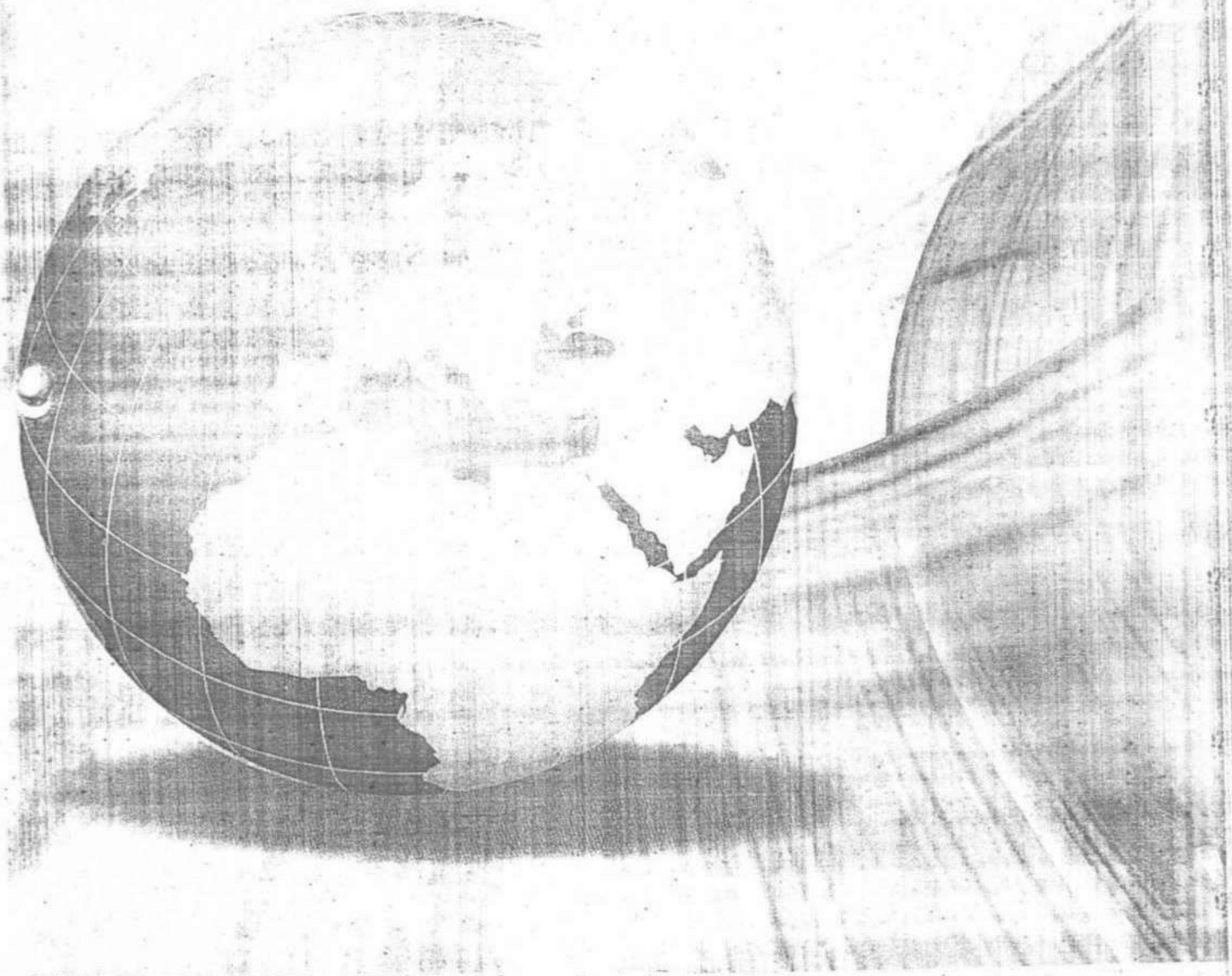

P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

Contents (Hindi Papers)

S. No	Particulars	Subject	Page No.	
			From	To
1.	संगीतानुरागी महात्मा गांधी राजेश गोपालराव केलकर, बड़ोदरा, गुजरात, भारत	कंठ्य संगीत	H-01	H-03
2.	बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं अभियान में मध्याह्न भोजन योजना की भूमिका (जनपद हरिद्वार एवं पौड़ी के विशेष सन्दर्भ में) हेमलता वर्मा, श्रीनगर, उत्तराखण्ड, भारत	राजनीति विज्ञान	H-04	H-09
3.	वर्तमान भारत में स्वामी विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता दीप्ति चतुर्वेदी, पाली, राजस्थान भारत	शिक्षा शास्त्र	H-10	H-13
4.	सुस्थिर विकास में विद्यालयों की भूमिका बिहारी लाल मीना, नई दिल्ली, भारत	शिक्षा शास्त्र	H-14	H-16
5.	स्वामी विवेकानन्द के विचारों का शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन अतुल कुमार मिश्र, सतना (म0प्र0) भारत	शिक्षा शास्त्र	H-17	H-20
6.	वर्तमान में शैक्षिक शोध की आवश्यकता एक अध्ययन भावना तिवारी, शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत	शिक्षा शास्त्र	H-21	H-23
7.	पूर्व माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन छविलाल एवम् रजनी सिंह, दयालबाग, आगरा, भारत	शिक्षा शास्त्र	H-24	H-29
8.	पं0 दीनदयाल उपाध्याय के चिंतन में धर्म सम्बन्धी अवधारणा धीरज सिंह, मोहननगर, गाजियाबाद, भारत	शिक्षा शास्त्र	H-30	H-33
9.	बी.एड. प्रशिक्षकों की भूगोल शिक्षण विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन कुसुम कान्ति कुजूर एवम् अनिता सिंह, छत्तीसगढ़, बिलासपुर, भारत	शिक्षा शास्त्र	H-34	H-36
10.	शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर जनसंख्या शिक्षा विकास की रणनीति आस्था प्रकाश, एवं शिवानी श्रीवास्तव, गोरखपुर, उ.प्र., भारत	शिक्षा शास्त्र	H-37	H-40
11.	सामान्य एवं अस्थि दिव्यांग बालक बालिकाओं के सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन अमितसौम्या एवम् वन्दना सिंह, लखनऊ, उ.प्र., भारत	गृहविज्ञान	H-41	H-44
12.	छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति – तीज त्योहार पद्मनी सिन्हा, एवं आभा रूपेन्द्र पाल, रायपुर (छ.ग.), भारत	इतिहास	H-45	H-50
13.	स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान भारत में समाजवादी समाज रचना के लिए जय प्रकाश नारायण का योगदान सुधाकर लाल श्रीवास्तव, गोरखपुर, उ.प्र., भारत	इतिहास	H-51	H-53
14.	चित्रकूट : एक तीर्थ महेन्द्र कुमार उपाध्याय, चित्रकूट (उ0प्र0) भारत	इतिहास	H-54	H-56
15.	कान्हड़दे प्रबंध में वर्णित सामाजिक जीवन बगता राम चौधरी, जालोर, राजस्थान, भारत	इतिहास	H-57	H-60
16.	राजस्थान के करौली जिले में प्राकृतिक आपदायें और उनका प्रबंधन हरीश सामरिया, जयपुर, राजस्थान, भारत	भूगोल	H-61	H-67
17.	टिहरी बांध : बदलता सामाजिक परिदृश्य व विकास की संभावनाएं शरद कुमार त्रिपाठी, देहरादून उत्तराखण्ड, भारत	भूगोल	H-68	H-70
18.	कृषि विकास केन्द्र एवं ग्रामीण विकास : जनपद मेरठ का एक भौगोलिक अध्ययन धनबीर सिंह, बागपत, उत्तर प्रदेश, भारत	भूगोल	H-71	H-75
19.	जलवायु परिवर्तन एवं ऊपरी लूनी बेसिन का बदलता फसल प्रारूप नरेन्द्र कुमार सांप, बगावर, राजस्थान भारत	भूगोल	H-76	H-78
20.	भारतीय अर्थव्यवस्था में उद्यमिता का योगदान नीरज कुमार, पीलीभीत, उ0प्र0, भारत	वाणिज्य	H-79	H-81

2021-22

(13)

ISSN : 2456-5474 Issue : September - 2021 RNI : UPBIL/2016/68367
Bi-lingual/Monthly

Innovation

The Research Concept

Multi-disciplinary/Peer Reviewed/Refereed International Research Journal

Publisher : Social Research Foundation, Kanpur (SRF International)

S R F

Impact Factor
SJIF = 6.122
IIJIF = 4.112

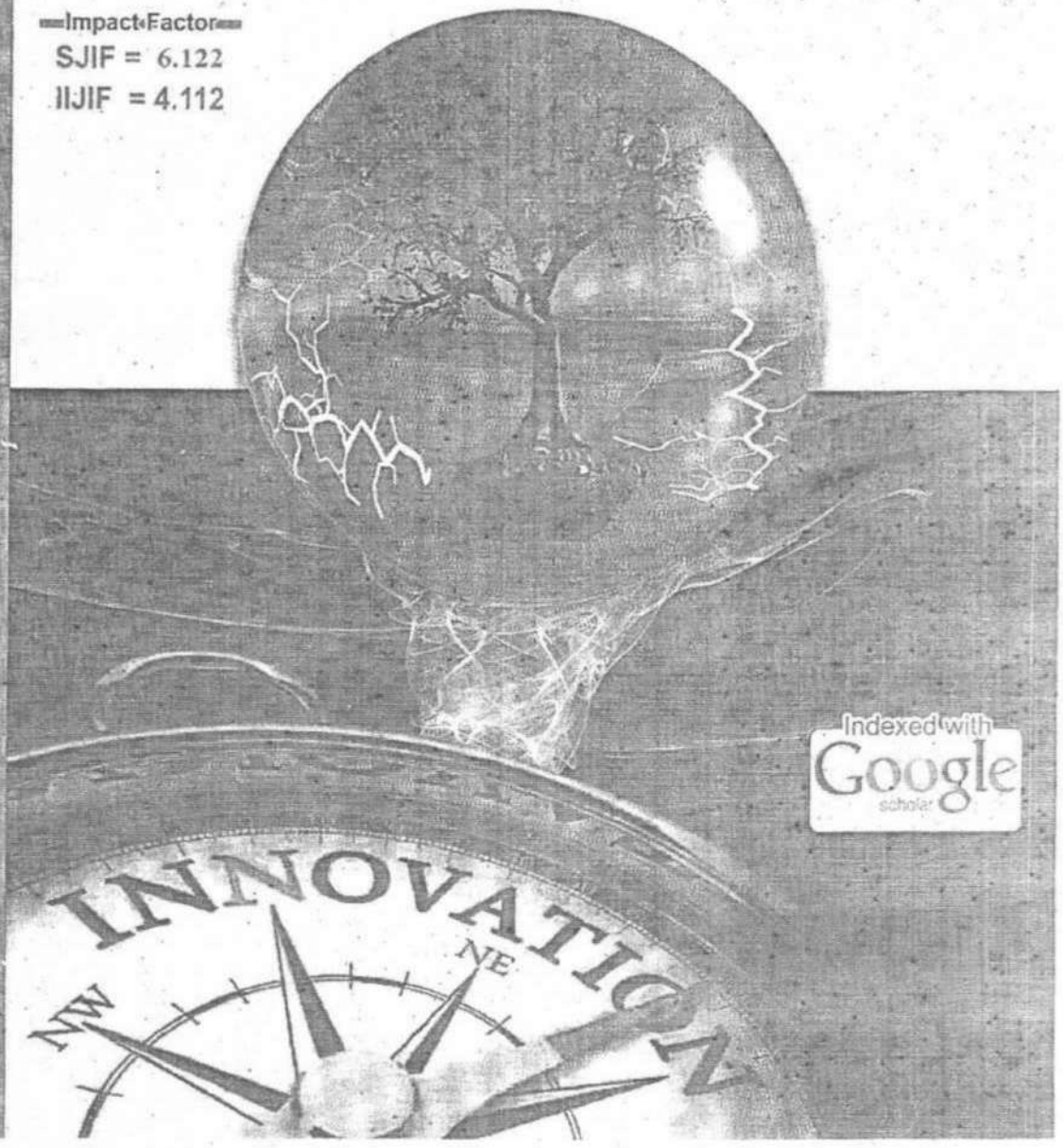

Indexed with Google scholar

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-8* September- 2021
Innovation The Research Concept

CONTENTS (HINDI)

S. No.	Particulars	Subject	Page No.	
			From	To
1.	पुराणों में तीर्थ परम्परा: कूर्म पुराण के विशेष सन्दर्भ में The Pilgrimage Tradition in the Puranas: With Special Reference to the Kurma Purana रागिनी राय, प्रयागराज, उ0प्र0, भारत	प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व	H-01	H-04
2.	भारतीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति और सशक्तीकरण (वैदिक व मध्यकाल से तुलनात्मक अध्ययन) Social Status and Empowerment of Indian Women (Comparative Study from Vedic and Medieval Periods) रजनी तसीवाल, टोंक, राजस्थान, भारत	राजनीति विज्ञान	H-05	H-10
3.	रामकुमार का जीवन परिचय एवं कलायात्रा के परिप्रेक्ष्य में Biography of Ramkumar and in the Context of Kalayatra दिलीप कुमार पटेल, हरियाणा, भारत	शिक्षाशास्त्र	H-11	H-19
4.	उपनिषदों में बिम्ब-विधान Imagery in the Upanishads सीमा यादव एवं आर.एन. यादव, मऊ, उत्तर प्रदेश भारत	संस्कृत	H-20	H-24
5.	सतत ग्रामीण विकास एवं पर्यावरण प्रबन्ध: बाँका जिला, (बिहार) का प्रतीक अध्ययन Sustainable Rural Development and Environment Management: A Case Study of Banka District, (Bihar) उग्रमोहन दास, भागलपुर, बिहार, भारत	भूगोल	H-25	H-27
6.	वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में जनसंख्या शिक्षा की प्रासंगिकता Relevance of Population Education in Present Indian Perspective संतोष कुमार सुमन, भागलपुर, बिहार, भारत	भूगोल	H-28	H-31
7.	ऊपरी केन बेसिन में स्थलरूपों के विकास का अध्ययन Study of the Evolution of landforms in the Upper Cane Basin ललित कुमार दुबे, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत	भूगोल	H-32	H-36
8.	पुनर्जागरण की पुनर्व्याख्या Reinterpretation of the Renaissance वगता राम चौधरी, जालोर, राजस्थान, भारत	इतिहास	H-37	H-40
9.	जैविक युद्ध और उसका प्रभाव Biological Warfare and its Effects बिरेन्द्र सिंह जयाड़ा, श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड भारत	रक्षा स्त्रातेजिक एवं भू-राजनीतिक अध्ययन	H-41	H-45
10.	होमरूल आन्दोलन - एक विवेचनात्मक अध्ययन (मध्यप्रान्त के विशेष संदर्भ में) Home Rule Movement - A Critical Study (with special reference to Madhya Pradesh) लक्ष्मण उईके, मझौली, जिला- सीधी म.प्र., भारत	इतिहास	H-46	H-49

2021-22

Anthology The Research

"1917 की बॉल्शेविक क्रांति तथा लेनिन के संदर्भ"

(13)

Paper Id:13-15893/279/Pending/ANTH-3/2022 Submission Date::2022-04-12 Acceptance Date:2022-04-13 Publication Date:0000-00-00

Abstract रूस की 1917 की बॉल्शेविक क्रांति ने रूस में राजतंत्र का खात्मा कर समाजवादी सरकार को स्थापित कर दिया। लेनिन बॉल्शेविक दल, ट्राटस्की जैसे निष्ठावान कार्यकर्ताओं और चेंका जैसे प्रशासनिक साधनों से रूसी क्रांति के बाद रूस में उपजे गृह युद्ध पर नियंत्रण किया और साम्यवाद का उभार प्रारंभ हुआ।

Keywords रूस, रूसी क्रांति, बॉल्शेविक दल, गृह युद्ध, मजदूर, किसान, क्रांति, संघर्ष, लाल सेना, ट्राटस्की, चेका, भूख, भारत, विचार आदि।

Introduction रूसी क्रांति ने 1917 में रूस की राजशाही (जारशाही) का अंत कर दिया और लेनिन के नेतृत्व में मजदूर-किसानों के विकास का मार्ग तैयार हुआ।

Review of Literature लेनिन का रूस आगे चलकर स्टालिन का रूस हुआ, गोर्बाच्योव ने इसे पूंजीवाद के हवाले करने के प्रयास किये और वर्तमान में ब्लाद्विमीर पुतिन इसे साम्राज्यवादी और ताकत का प्रतीक बनाने पर तुले है। इतने लम्बे इतिहास में रूसी क्रांति को केवल इसीलिए याद किया जा सकता है कि उससे मजदूर-किसान और गरीब गुरबे का भला हो सका।

Main Text एक कहावत जो रूस से लेकर भारत में बहुत प्रसिद्ध रही है, वह है-'जब तक भूखा इंसान रहेगा..... दुनिया में तूफान रहेगा।..... रूस के क्रांतिकारी हालात और उससे उपजी परिवर्तनकारी दशाओं को ध्यान में रखकर ये कहावत अस्तित्व में आई थी।..... मुंशी प्रेमचंद जैसे प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार ने जिस क्रांति को जायज और विकासगामी ठहराया था, 1930 में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने जिस क्रांति की प्रशंसा की थी, उसे 1917 की बॉल्शेविक क्रांति के नाम से जाना जाता है और अनेक विचारक सामान्य भाषा में इसे 'रूसी क्रांति' कहते रहे हैं।

जारशाही जैसी राजसत्ता का धड़ाधड़ तरीके से अंत कर समाजवादी व्यवस्था को काबिज करने वाली ये रूसी क्रांति पूरी दुनिया में एक वैचारिक तूफान की तरह फैलती गयी और यूरोप के अनेक देश तथा अमेरिका जैसी ताकत इसके उभार से थर्रा उठे।

भारत में राम मनोहर लोहिया जैसे युगपुरूष जिस समाजवादी व्यवस्था की हिमायत करते रहे, वो व्यवस्था और वैचारिकता 'बॉल्शेविक क्रांति' के बाद ही आ पाई।

बॉल्शेविक मूलतः रूस का एक राजनैतिक दल था जो लेनिन के नेतृत्व में मजबूत और प्रभावी होता गया और अपने समकालीन - मेंशेविक जैसे राजनैतिक दलों को उसने बहुत पीछे छोड़कर जनता का विश्वास हासिल किया। रूस में जार (सम्राट) का शासन था जो रोमोनोव वंश से था और 300 वर्षों से इस वंश का शासन चला आ रहा था। जार निकोलस द्वितीय के अत्याचार, उसकी पत्नी के गुरु रासपुटिन के भ्रष्टाचार व अंधविश्वास जनित कार्यों से जनता भड़कने लगी। धार्मिक रूढ़ियों व भ्रष्टाचार के अंत के लिये 'निहिलिस्ट' आन्दोलन हुआ। बॉल्शेविक दल और लोनिन ने संघर्ष किया, मेंशेविक दल ने उदारवादी तरीके से जार का विरोध किया।

हरिशंकर शर्मा रूस की बॉल्शेविक क्रांति और लेनिन द्वारा इसमें निभायी भूमिका पर लिखते है- "लेनिन के विचारों से स्पष्ट होता है कि वह प्रजा की हुकूमत में विश्वास करता था। उसका कहना था कि हम रूस में इस प्रकार की शासन व्यवस्था कायम करना चाहते हैं जिसमें कृषक, श्रमिक व सैनिकों का पूर्ण सहयोग हो। 1

वास्तव में लेनिन के ये विचार समाज के मूलभूत पक्षों को साथ लेकर परिवर्तन की बात सामने रखते हैं और समाज के सभी उपेक्षित पक्षों को साथ लेकर उनका भला करने के प्रयास ही समाजवाद की परिभाषा गढते हैं।

रूसी क्रांति में लियोटॉलस्टॉय, तर्गनेव, डोस्टोवश्की, मैक्सिम गोर्की आदि साहित्यकारों की भूमिका को भी अहम माना जाता है। लेनिन ने इस्करा और जार्या जैसे पत्र स्विट्जरलैंड में प्रवास करते हुए निकाले थे जो रूस की जनता में लोकप्रिय हुए और लेनिन के समाजवादी विचार घर-घर पहुँचे।

रूस की जनता धीरे-धीरे राजतंत्र और सेना के विरूद्ध विद्रोह पर उतारू होने लगी। हरिशंकर शर्मा अपने ग्रंथ "आधुनिक विश्व की रूपरेखा" में इस संबंध में लिखते हैं कि "रूस के लोगों को आशंका हो गई कि कहीं सेना देश पर अधिकार न कर बैठे। इस पर लोगों ने बॉल्शेविक पार्टी का समर्थन करना आरंभ कर दिया।"2

नवम्बर 1917 में रूस में रक्तहीन बॉल्शेविक क्रांति हुई और सत्ता बॉल्शेविक साम्यवादी दल के हाथ में आयी तथा लेनिन को मंत्रिमंडल का प्रमुख बनाया गया। सन् 1917 से 1920 तक बॉल्वेशिक सरकार को विरोधियों

"1917 की बॉल्शेविक क्रांति तथा लेनिन के संदर्भ"Paper Id:13-15893/279/Pending/ANTH-3/2022 Submission Date::2022-04-12 Acceptance Date:2022-04-13 Publication Date:0000-00-00Abstractरूस की 1917 की बॉल्शेविक क्रांति ने रूस में राजतंत्र का खात्मा कर समाजवादी सरकार को स्थापित कर दिया। लेनिन बॉल्शेविक दल, ट्राटस्की जैसे निष्ठावान कार्यकर्ताओं और चेंका जैसे प्रशासनिक साधनों से रूसी क्रांति के बाद रूस में उपजे गृह युद्ध पर नियंत्रण किया और साम्यवाद का उभार प्रारंभ हुआ।Keywordsरूस, रूसी क्रांति, बॉल्शेविक दल, गृह युद्ध, मजदूर, किसान, क्रांति, संघर्ष, लाल सेना, ट्राटस्की, चेका, भूख, भारत, विचार आदि।Introductionरूसी क्रांति ने 1917 में रूस की राजशाही (जारशाही) का अंत कर दिया और लेनिन के नेतृत्व में मजदूर-किसानों के विकास का मार्ग तैयार हुआ। Review of Literatureलेनिन का रूस आगे चलकर स्टालिन का रूस हुआ, गोर्बाच्योव ने इसे पूंजीवाद के हवाले करने के प्रयास किये और वर्तमान में ब्लाद्विमीर पुतिन इसे साम्राज्यवादी और ताकत का प्रतीक बनाने पर तुले है। इतने लम्बे इतिहास में रूसी क्रांति को केवल इसीलिए याद किया जा सकता है कि उससे मजदूर-किसान और गरीब गुरबे का भला हो सका।Main Text

एक कहावत जो रूस से लेकर भारत में बहुत प्रसिद्ध रही है, वह है-'जब तक भूखा इंसान रहेगा..... दुनिया में तूफान रहेगा।..... रूस के क्रांतिकारी हालात और उससे उपजी परिवर्तनकारी दशाओं को ध्यान में रखकर ये कहावत अस्तित्व में आई थी।..... मुंशी प्रेमचंद जैसे प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार ने जिस क्रांति को जायज और विकासगामी ठहराया था, 1930 में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने जिस क्रांति की प्रशंसा की थी, उसे 1917 की बॉल्शेविक क्रांति के नाम से जाना जाता है और अनेक विचारक सामान्य भाषा में इसे 'रूसी क्रांति' कहते रहे हैं।

जारशाही जैसी राजसत्ता का धड़ाधड़ तरीके से अंत कर समाजवादी व्यवस्था को काबिज करने वाली ये रूसी क्रांति पूरी दुनिया में एक वैचारिक तूफान की तरह फैलती गयी और यूरोप के अनेक देश तथा अमेरिका जैसी ताकत इसके उभार से थर्रा उठे। भारत में राम मनोहर लोहिया जैसे युगपुरूष जिस समाजवादी व्यवस्था की हिमायत करते रहे, वो व्यवस्था और वैचारिकता 'बॉल्शेविक क्रांति' के बाद ही आ पाई।

बॉल्शेविक मूलतः रूस का एक राजनैतिक दल था जो लेनिन के नेतृत्व में मजबूत और प्रभावी होता गया और अपने समकालीन - मेंशेविक जैसे राजनैतिक दलों को उसने बहुत पीछे छोड़कर जनता का विश्वास हासिल किया।

रूस में जार (सम्राट) का शासन था जो रोमोनोव वंश से था और 300 वर्षों से इस वंश का शासन चला आ रहा था। जार निकोलस द्वितीय के अत्याचार, उसकी पत्नी के गुरु रासपुटिन के भ्रष्टाचार व अंधविश्वास जनित कार्यों से जनता भड़कने लगी। धार्मिक रूढ़ियों व भ्रष्टाचार के अंत के लिये 'निहिलिस्ट' आन्दोलन हुआ। बॉल्शेविक दल और लोनिन ने संघर्ष किया, मेंशेविक दल ने उदारवादी तरीके से जार का विरोध किया।

हरिशंकर शर्मा रूस की बॉल्शेविक क्रांति और लेनिन द्वारा इसमें निभायी भूमिका पर लिखते है- "लेनिन के विचारों से स्पष्ट होता है कि वह प्रजा की हुकूमत में विश्वास करता था। उसका कहना था कि हम रूस में इस प्रकार की शासन व्यवस्था कायम करना चाहते हैं जिसमें कृषक, श्रमिक व सैनिकों का पूर्ण सहयोग हो। 1

वास्तव में लेनिन के ये विचार समाज के मूलभूत पक्षों को साथ लेकर परिवर्तन की बात सामने रखते हैं और समाज के सभी उपेक्षित पक्षों को साथ लेकर उनका भला करने के प्रयास ही समाजवाद की परिभाषा गढ़ते हैं।

रूसी क्रांति में लियोटॉलस्टॉय, तर्गनेव, डोस्टोवश्की, मैक्सिम गोर्की आदि साहित्यकारों की भूमिका को भी अहम माना जाता है। लेनिन ने इस्करा और जार्या जैसे पत्र स्विट्जरलैंड में प्रवास करते हुए निकाले थे जो रूस की जनता में लोकप्रिय हुए और लेनिन के समाजवादी विचार घर-घर पहुँचे।

रूस की जनता धीरे-धीरे राजतंत्र और सेना के विरूद्ध विद्रोह पर उतारू होने लगी। हरिशंकर शर्मा अपने ग्रंथ "आधुनिक विश्व की रूपरेखा" में इस संबंध में लिखते हैं कि "रूस के लोगों को आशंका हो गई कि कहीं सेना देश पर अधिकार न कर बैठे। इस पर लोगों ने बॉल्शेविक पार्टी का समर्थन करना आरंभ कर दिया।"2

नवम्बर 1917 में रूस में रक्तहीन बॉल्शेविक क्रांति हुई और सत्ता बॉल्शेविक साम्यवादी दल के हाथ में आयी तथा लेनिन को मंत्रिमंडल का प्रमुख बनाया गया। सन् 1917 से 1920 तक बॉल्वेशिक सरकार को विरोधियों (मेंशोविक दल, सामंत-जमीदार, जार समर्थक, इंगलैड, फ्रांस, अमेरिका) द्वारा छेडे गये गृह-युद्ध का सामना करना पड़ा और जनता के समर्थन, ट्राटस्की की 'लाल सेना' के आतंक व 'चेका' (विशेष न्यायालय) के कारण विरोधी समर्पण को तैयार हुए व साम्यवाद का डंका बजा।

शासकों जमींदारों और पंूजीवादी राष्ट्रो व कॉर्पोरेट ताकतो द्वारा बॉल्शेविक विचारधारा व लेनिन का खुला विरोध करना इस बात की पुष्टि करता है कि लेनिन श्रमिक व किसान तथा निम्न मध्यमवर्ग की जनता का नायक था और पंूजीवादी व सांमती ताकते

सदैव से ही शोषणकारी विचारधारा की पोषक रही है। पी. एन. तिवारी इन हालात का बयान करते हुए लिखते है -"रूस की क्रांति ही पहली क्रांति थी जिसमें मजदूरों ने किसानों और सैनिको के साथ मिलकर शासन के विरूद्ध बगावत की, जिसमें सर्वहारा वर्ग सफल रहा। इस क्रांति ने दलितों को आवाज दी और मजदूरों को अपनी शक्ति का भान कराया।"3

रूस इस क्रांति ने गरीब आदमी में यह चेतना ला दी कि उसे उसका अधिकार मिलने के साथ-साथ भविष्य में सत्ता संगठन और सर्वोच्च पद तक पर बैठने का मौका मिलेगा। वास्तव में रूसी क्रांति गरीब आदमी के स्वाभिमान का गुणात्मक रूप साबित हुई। एक तरफ की तमाम ताकतवर ताकतों से लोनिन ने जनता और हौंसलो के भरोसे ही लड़ाई लड़ी थी और वह इसमें विजयी हुआ। जनता ने लेनिन की विजय में अपनी विजय मानी।

रूस की बॉल्शेविक क्रांति के कारणों पर यदि हम विचार करें तो हम देखते हैं कि जारशाही की निरंकुशता, अत्याचार और भ्रष्टाचार बढ़ चुका था। सामाजिक असमानता चरम पर थी। किसानों की दुर्दशा हो रही थी। मजदूरों की दशा दयनीय हो चुकी थी। जार द्वारा गैर रूसी जातियों का रूसीकरण करने से असंतोष उत्पन्न हो रहा था। निहिलिस्ट आंदोलन द्वारा जार का विरोध किया जा रहा था। सन् 1905 की मजदूर क्रांति (खूनी रविवार की घटना) घटित हो चुकी थी। ड्यूमा (संसद) का प्रभाव जार ने खत्म कर डाला था। लेखक और साहित्यकार क्रांति को हवा दे रहे थे। नौकरशाही भ्रष्ट हो चुकी थी। जार निकोलस द्वितीय की अकर्मण्यता भी एक बड़ा कारण थी। रासपुटिन जैसे राजगुरू का भ्रष्टाचार और अंधविश्वास को बढ़ावा देने की प्रवृत्ति से जनता कुपित थी। समाजवाद का विकास हो रहा था। सोशल डेमोक्रेट्रिक दल (बॉल्वेशिक तथा मेंशेविक) सक्रिय थे। प्रथम विश्व युद्ध में सैनिकों की बड़े स्तर पर मौत हो रही थी। राशन की भयंकर कमी हो रही थी। .... ये तमाम कारण अंततः 1917 की क्रांति का आधार बने और रूस में राजसत्ता का खात्मा हो गया।

लेनिन ने एक आम आदमी की तरह रूस के हालात और जनता की समस्याओं को समझा और एक समझदार तथा निष्ठावान - समर्पित नेता की तरह रूसी राष्ट्रवाद को लोककल्याणकारी परिणाम में परिणत किया।

पी. एन. तिवारी लिखते हैं कि "इस क्रांति (रूसी क्रांति) ने सामाजिक परिवर्तन पर बल दिया और इसके लिए उचित समझा कि समाज के निम्न वर्ग के लोगों का प्रशासन पर अधिकार होना चाहिए।"4

वास्तव में 1917 की बॉल्शेविक क्रांति स्पष्ट तौर पर गरीबों को हक दिलाने की क्रांति थी और इसमें जायज-नाजायज सभी तरीके आजमाए गए जिससे जार और शोषक पूंजीपतियों की सत्ता तथा प्रभुत्व को खत्म किया जा सकें।

लेनिन ने क्रांति में विजय के पश्चात् जो भी काम किये वे प्रायः जनहितकारी ही माने गये। जमीन और कारखानों का राष्ट्रीयकरण करने से जनता को अपने जीवन स्तर में सुधार का अवसर मिला, शिक्षा को सर्वसुलभ और सुगम बनाने से जनता शिक्षित-विवेकवान और उचित मानव संसाधन के रूप में विकसित हुई। श्रमिकों के हित में कानून बनाए जाने से उनकी कार्यक्षमता और उत्साह में वृद्धि हुई। किसानों के लिए अनेक लाभकारी प्रावधान करने से फसल उत्पादन बढ़ा और विरोधियों को कठोरता से दबाने के कारण अराजकता शांत हो गई, तंत्र तथा व्यवस्था चलाने में सुगमता हुई।

रूस की क्रांति को 'जनता की क्रांति' कहा जा सकता है क्योंकि जनता के प्रत्यक्ष- परोक्ष सहयोग से ही इस क्रांति में सफलता मिल सकी और इसका सर्वाधिक फायदा भी जनता को ही मिल सका।

लेनिन के नेतृत्व में रूसी क्रांति की सफलता पर डॉ. कृष्ण गोपाल शर्मा लिखते हैं - "लेनिन अपने अग्रज की तरह भावुक क्रांतिकारी नहीं था, जो दो चार की हत्या कर स्वयं भी सत्ता के हत्थे चढ़ जाए। उसने संकट की घड़ी में बिना हिचक पलायन किया और मौका आने पर ही लौटा।" 5

रूसी क्रांति का नायक लेनिन कजान प्रांत में जन्मा था और विश्वविद्यालय की पढ़ाई के दौरान ही क्रांतिकारी गतिविधियों के चलते उसे जेल भेज दिया गया था। 5 साल बाद आजाद होकर वह देश से निकाला गया और स्विट्जरलैंड जाकर 'इस्करा' व 'जार्या' पत्र निकालकर रूसी जनता को जागृत किया। सन् 1917 में पेट्रोग्राड पहुँचकर उसने बॉल्शेविक दल को संगठित किया और 'मध्यमवर्गीय क्रांति (बुर्जुआ क्रांति) की जगह 'समाजवादी क्रांति' (सर्वहारा क्रांति) का नारा दिया। 01 जुलाई में लोनिन के नेतृत्व में असफल विद्रोह हुआ और लेनिन भागकर फिनलैंड गया। 01 सितम्बर 1917 में लेनिन ने बॉल्शेविक दल की कार्यकारिणी को पत्र लिखकर क्रांति का आदेश दिया। खुराना एवं शर्मा के अनुसार- "07 नवम्बर 1917 को बोल्शेविक दल के स्वयंसेवकों ने पेट्रोग्राड के सरकारी कार्यालय और रेल्वे स्टेशन पर अधिकार कर लिया। केरेन्सकी ने किसी अज्ञात स्थान पर भागकर जान बचायी। उसके अनेक साथियों व मंत्रियों को बन्दी बना लिया गया। सेना के मुख्यालय पर भी बॉल्शेविकों ने अधिकार स्थापित कर लिया।"6

लेनिन ने अपने राजनैतिक प्रबंधन, कूटनीति और बेहतर कार्य योजना से रूस की सत्ता की सत्ता और प्रशासन पर नियंत्रण तो कर लिया किन्तु उसे मेंशेविक दल, सामंतो, जार-समर्थ को और इंगलैंड, फ्रांस एवं अमेरिका के भीषण विरोध का सामना करना पड़ा जिसे 'चेका' जैसे न्यायालय की मदद और ट्राटस्की की 'लाल सेना' के बल पर कठोरता से कुचल दिया गया। रूस की जनता का अपार समर्थन लेनिन के लिए हर राजनैतिक कदम सुगम बनाता गया।

रूस की क्रांति का प्रभाव हर देश के मजदूरों पर पड़ा और किसान भी इससे अछूते नहीं रह पाए। रूस की इस क्रांति का ही परिणाम था कि पूंजीवादी ताकतों ने समाजवाद को अपना खुला शत्रु मान लिया और राष्ट्र संघ तक को श्रमिकों के कल्याण के लिए अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक संघ की स्थापना करनी पड़ी।

लेनिन ने जमीन और कारखानों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। अमेरिका और यूरोप के पंूजीपति देश लेनिन के नेतृत्व वाले रूस के कट्टर शत्रु बन गए। पी. एम. तिवारी इन हालात का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि - "लेनिन की कारवाइयों से देशी एवं विदेशी पूंजीपति विक्षुब्ध हुए और उन्होंने 1919 ई. में रूस पर देशी पंूजीपतियों की मिलीभगत से हमला कर दिया। 1919 ई. के अंत तक ऐसा लगता था कि साम्यवादी रूस का अंत हो जाएगा, लेकिन लोनिन ने इस विकट स्थिति का सामना डटकर योग्यतापूर्वक किया।"7

डॉ. हेतसिंह बघेला लिखते हैं - "रूसी साम्यवादी अपनी क्रांति को विश्व क्रांति का अग्रदूत समझते थे। बॉल्शेविक नेताओं की दृष्टि में कितनी ही राष्ट्रीय क्रांतियां होने को थी। लेनिन का विश्वास था कि प्रथम महायुद्ध के कारण पश्चिमी देशों का पूंजीपति वर्ग नष्ट हो जाएगा।"8

हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक डॉ. अमरनाथ के अनुसार- "रूसी क्रांतिकारी नेता व विचारक लेनिन ने साम्राज्यवाद को पंूजीवाद की चरम अवस्था कहा था।"9

बॉल्शेविक विचारधारा और लेनिन की स्पष्ट मान्यता थी कि वे अमीरों के अत्याचारों और शोषण के खिलाफ गरीबों की मदद कर उनका विकास करने के लिए ही सत्ता चाहते है।

हालांकि लेनिन और उसके समर्थकों का यही दावा था कि रूसी क्रांति गरीबों के भले के लिए है लेकिन उनके इस काम में एक प्राकृतिक विपदा ने बाधा पैदा की। सन् 1921-22 में रूस में भयंकर अकाल पड़ा और तत्कालीन स्त्रोतों से पता चलता है कि इस अकाल में 50 लाख लोग भूख से मरे। लेनिन के कट्टर समर्थक ट्राटस्की ने कहा कि 'यह क्रांति हमें बहुत महंगी पड़ी है।' हालांकि आगे चलकर हालात नियंत्रण में आए। बॉल्शेविक क्रांति के परिणाम दीर्घकालिक व दूरगामी सिद्ध हुए। जारशाही का अंत हुआ। रूस प्रथम विश्व युद्ध से निकला, रूस एक ताकतवर देश के रूप में उभरा, लेनिन का अधिनायकवाद अस्तित्व में आया, पंूजीवादी व्यवस्था समाप्त हो गई, किसानों की हालत सुधरी, औद्योगिक विकास होने लगा, श्रमिकों का जीवन स्तर सुधरा, असमानता का अंत हुआ, स्त्रियों की दशा में सुधार आया, शिक्षा का विकास हुआ, वर्ग संघर्ष समाप्त हुआ व सर्वाहारा वर्ग का महत्व बढ़ा।

1917 की रूस की क्रांति के बाद यद्यपि लेनिन और बॉल्शेविक दल के अनेक कदमों की, नीतियों की आलोचना की जा सकती है लेकिन अन्य व्यवस्थाओं के मुकाबले गरीब-गुरबें के लिए इस क्रांति के बाद का साम्यवाद और समाजवाद बेहतर सिद्ध हुआ। आगे चलकर लेनिन का नायकत्व ही उसके स्वयं के चरित्र को खंडित करने लगा और वह साम्राज्यवाद की दौड़ में चाहे-अनचाहे कूद गया। सन् 1918 में लेनिन के नेतृत्व में रूस का नया संविधान बना और इसी संविधान में किसान-मजदूरों के अधिकारों की रक्षा की घोषणा हुई। इसी संविधान के तहत रशियन सोश्लिस्ट फेडरल सोवियत रिपब्लिक ;त्ण्ैण्थ्ण्ैण्त्ण्द्ध की स्थापना हुई और मास्को रूस की राजधानी बना। सन् 1924 में लेनिन की मृत्यु हो गई।

रूसी क्रांति की आलोचना करते हुए इस क्रांति के एक नेता जिनोवीव ने कहा था-"हमने कभी यह कल्पना नहीं कि गृह-कलह के काल में हमें इस प्रकार की आतंकवादी नीति अपनानी पड़ेगी और हमारे हाथ खून से रंग जावेंगे।"10

Conclusionयदि मजदूर-किसान और गरीब की पीड़ा तंत्र और व्यवस्था द्वारा समय पर समझी जाए और उसका परिहार किया जाए तो संघर्ष के हालात नहीं बनेंगे।References1. आधुनिक विश्व-हरिशंकर शर्मा, पृष्ठ 505, मल्लिक एंड कम्पनी, जयपुर, चतुर्थ संस्करण 2000

2. आधुनिक विश्व की रूपरेखा- (1453-1976 ई.)- हरिशंकर शर्मा पृष्ठ 459, मल्लिक एंड कम्पनी जयपुर, 2001

3. ज्म्।ब्भ् ल्व्न्त्ैम्स्थ् भ्प्ैज्व्त्ल् (यूरोप का इतिहास-1789-1950 ई.)-पी. एन. तिवारी, भारती भवन, पटना 2012

4. ज्म्।ब्भ् ल्व्न्त्ैम्स्थ् भ्प्ैज्व्त्ल् (यूरोप का इतिहास-1789-1950 ई.)-पी. एन. तिवारी, पृष्ठ 201, भारती भवन पटना, 2012

5. आधुनिक विश्व का इतिहास-डॉ. कृष्ण गोपाल शर्मा, कमल सिंह कोठारी, डॉ. विष्णु प्रसाद शर्मा, पृष्ठ 233, अजमेर बुक कम्पनी, जयपुर, 2019

6. विश्व का इतिहास (1789-1964 ।ण्क्ण्) खुराना एवं शर्मा, पृष्ठ 109, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा, 2014, द्वादश संस्करण

7. ज्म्।ब्भ् ल्व्न्त्ैम्स्थ् भ्प्ैज्व्त्ल् (यूरोप का इतिहास-1789 से 1950 ई.)-पी. एन. तिवारी, पृष्ठ 203, भारती भवन

पटना, 2012

8. यूरोप का इतिहास-(1789-1950 ई.)-डॉ. मथुरालाल शर्मा, डॉ. हेतसिंह बघेला, पृष्ठ 174, कॉलेज बुक डिपो नयी दिल्ली, 1988

9. हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली- डॉ. अमरनाथ, पृष्ठ 468, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली 2009 पहला संस्करण

10. छम्ॅ ब्।डठत्प्क्ळंम् डव्क्म्त्छ भ्प्ैज्व्त्ल्ए टण्12 च्।ळम् 415